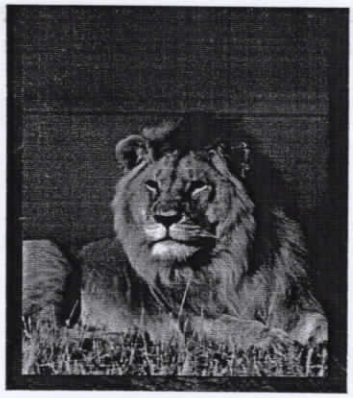

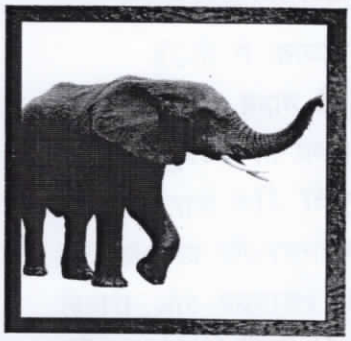

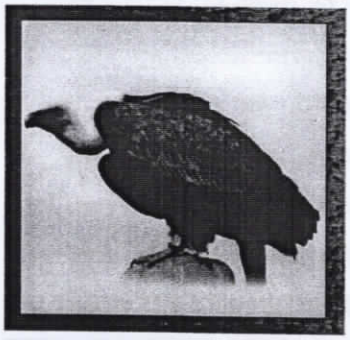

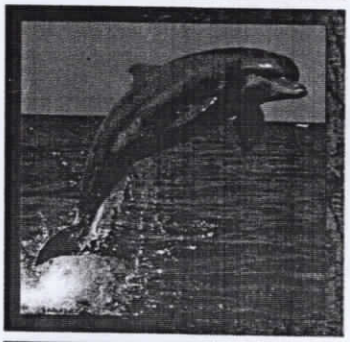

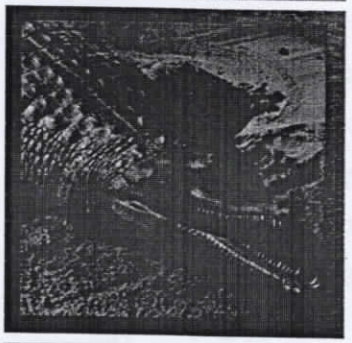

Journal Of Contemporary Science

(An International Journal)

ISSN - 2278-8418

March Volume - 06

Bio - Tech 2017

उत्तिष्ठत जाग्रत

ज.ह. शासकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय बैतूल

Published by

Dept. of Biotechnology

J.H. Govt. P.G. Lead College

Betul (M.P.)

Principal & Patron

Dr. (Major) Satish Jain

Convener

Dr. Sukhdev Dongre

Email : dongresukhdev13@gmail.com

Mob : 9425685371

बुंदेली के साहित्येतिहासकार – डॉ. रामनारायण शर्मा

लोकश नरवरे
शोधार्थी

बुंदेली में काव्य–सृजन की दीर्घ परम्परा है। 12 वीं सदी से लेकर आज तक इस काव्य धारा का सतत् प्रवाह है। आदिकाल में जगनिककृत 'आल्हाखण्ड' उपबोली 'बनाफरी' में लिखा गया है, जिसे बुंदेली का प्रथम महाकाव्य भी कहा जाता है। इसके अनन्तर ग्वालियर नरेश डूगरेन्द्र सिंह तोमर के राज कवि 'विष्णुदास' ने बुंदेली की ग्वालेयरी उप बोली में 'महाभारत' और 'रामायण' नाम के महाकाव्य की रचना की थी 'बुंदेली का प्रभाव रीतिकाल के प्रथमाचार्य केशवदास के ग्रंथो तथा बिहारी और पदमाकर के काव्य पर दिखाई देता है। लोक कवि ईसुरी के अवतरण से सारा बुंदेलखण्ड बुंदेलीमय हो गया। किसी कवि के यह कथन अक्षरशः सत्य है–

"रामायण तुलसी कही, तानसेन कौ राग। तैसे या कलिकाल में, कही ईसुरी फाग।

ईसुरी का अनुसरण करते हुए सैकड़ो फागकारों ने फाग लिखकर माँ बुंदेली का भण्डार भरा था। आधुनिक काल में बुंदेली कावियों की बाढ सी आ गई। पंडित द्वारिकेश मिश्र, चतुरेश, रामचरण हयारण 'मित्र' अवधेश,ओमकार सक्सेना 'प्रकाश' बुंदेली साहित्य के भण्डार में श्रीवृध्दि की। इसी बुंदेली काव्यमय वातावारण का प्रभाव डॉ. रामानारायण शर्मा को बुंदेली काव्यमय वातावरण का प्रभाव डॉ रामनारायण शर्मा की साहित्यिक सर्जना पर पड़ना स्वभाविक था। डॉ. शर्मा को बुंदेली काव्य सृजन की प्रेरणा अपने पुज्य पिताजी आचार्य चतुरेश से प्राप्त हुई थी। आपके ज्येष्ठ भ्राता कन्हैयालाल शर्मा 'कलश' स्वंय एक बुंदेली कवि और साहित्यकार थे वे अपने समसामयिक कवियो के कदम से कदम मिलाकर आगे बढते रहे। अपने सामयिक कवियो में डॉ. रामनारायण शर्मा की छाप अलग दिखाई देती है। बुंदेलखण्ड के विभिन्न क्षेत्रो में कुछ कवियों ने तो अत्यअधिक प्रसिध्द और लोकप्रियता अर्जित की थी, किन्तु अधिकांश कवि अज्ञात और अंधेरे में पड़े हुए थे' उन समस्त कवियो को प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ. शर्मा को प्राप्त है आपने हर क्षेत्र में घूम घूमकर कवियो और साहित्यकारो का परिचय प्राप्त किया' आप बुंदेलखण्ड में आयोजित अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों मे सम्मिलित होकर उस क्षेत्र के अज्ञात कवियो का परिचय प्राप्त करते रहे, वे झाँसी के पुरातत्व संग्रहालय में लोकगाथा,लोक कथा, लोकगीत और लोकनाट्य पर आधारित कार्यकम आयोजित कर समसामयिक कवियो को आमंत्रित कर जनसाधारण को उनके व्यक्तिगत और कृतित्व से परिचित कराते रहे। प्रतीत उनके कार्यो से स्पष्ट होता है कि डॉ. रामनारायण शर्मा का समसामयिक कवियों में सर्वोपरि स्थान है। डॉ. शर्मा ने 'बुंदेली भाषा–साहित्य का इतिहास' लिखकर मानो अपने आपको समसामयिक कवियो के केन्द्र में स्थापित कर लिया है और सारे के सारे कवि उनके चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। डॉ. हरिसिंह गौर विशवविद्यालय सागर के हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं बुंदेली पीठ के अध्यक्ष डॉ. बलभद्र तिवारी ने लिखा है– "बुंदेली भाषा साहित्य का इतिहास डॉ. रामनाराण शर्मा का एक भगीरथ प्रयास है जिसमें भाषा और साहित्य को समग्र रुप से ऐतिहासिक दृष्टि से सजोने का उपक्रम है यह कृति एक ओर बुंदेली की